आज़ादी का अमृत महोत्सव

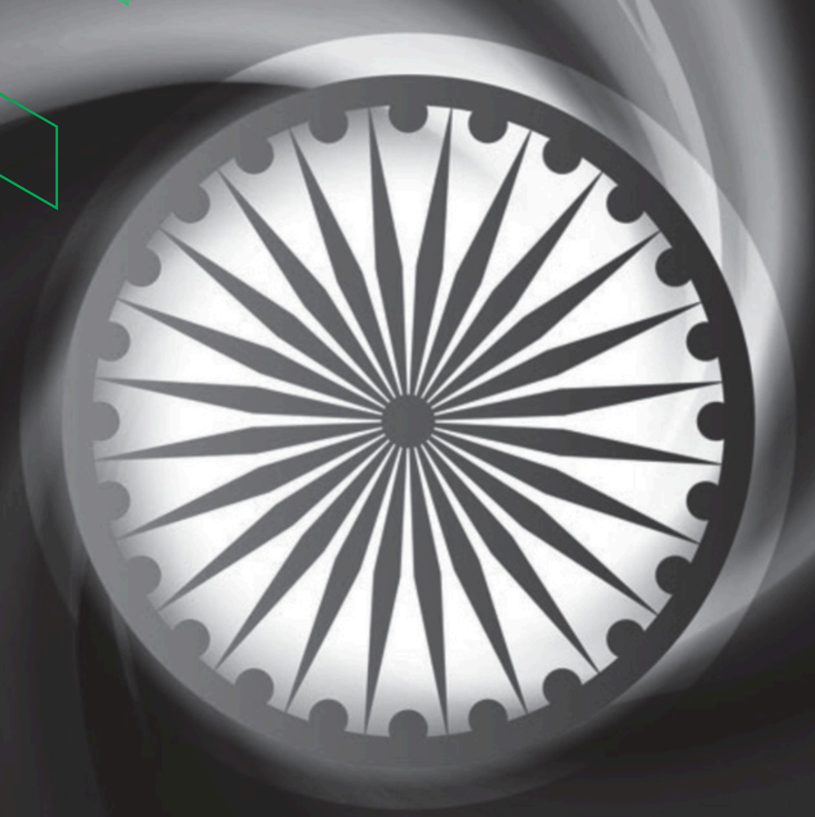

हरियाणा के क्रांतिवीर

आज़ादी के कुछ अनकहे किस्से और नायक

प्रस्तुतिः रास कला मंच, सफीदों | लेखकः पवन भारद्वाज | निर्देशकः रवि मोहन

रास कला मंच की पूर्व प्रस्तुतियों
के लिए शुभकामनाएं

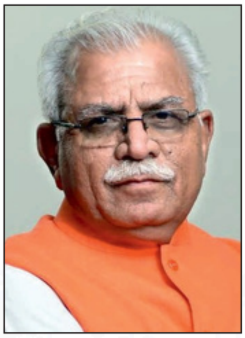

मनोहर लाल
MANOHAR LAL

सत्यमेव जयते

मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़।

CHIEF MINISTER, HARYANA,
CHANDIGARH.

Dated 3-1-2022

Message

It gives me immense pleasure to know that Ras Kala Manch is organizing 11th Chalo Theatre National Theatre Festival and Ras Rang Samman at PIET, Samalakha in district Panipat from March 23rd to 29th, 2022.

Theatre is a strong medium of expression. Such programmes not only provide an apt platform to the artistes to exhibit their talent, but also generate awareness amongst the people about various aspects of our society, thus bringing about a positive social change in the society.

I am sure this theatre festival will get tremendous response from theatre lovers and would also inspire many others to take interest in this performing art.

My best wishes for the success of the 11th Chalo Theatre National Theatre Festival and Ras Rang Samman.

मनोहर लाल

(Manohar Lal)

राज कला मंच की पूर्व प्रस्तुतियों
के लिए शुभकामनाएं

Dr. AMIT K. AGRAWAL, IAS

D.O. No. ....

Director General,
Information, Public Relations &
Languages, Haryana,
Chandigarh.

Dated ......17-1-2022.........

Message

I am glad to know that 11th Chalo Theatre National Theatre Festival and Ras Rang Samman is being organized by the theatre group, Ras Kala Manch at Samalkha in district Panipat from **March 23rd to 29th, 2022.** and a Souvenir is also being brought out to mark the occasion.

Theatre is not only a strong medium for self expression, but also a great binder between people of different religions, castes and communities across the world. Therefore, such programs help in bringing about positive social changes in the society and also strengthen national integration.

I hope, the Ras Kala Manch will continue to project our rich cultural heritage in its true perspective in the present scenario when the youth seems to be influenced by the western culture.

I am sure, the theatre festival will not only rejuvenate the spirits of theatre lovers, but would also inspire many others to take interest in the art of theatre.

I extend my best wishes for the success of the 11th Chalo Theatre National Theatre Festival and the publication of the souvenir.

(Dr. Amit Kumar Agrawal)

Room No. 62, 4th Floor, Haryana Civil Secretariat, Sector-1, Chandigarh.
Tel. No. 0172-2740228, E-mail : apscm-cmo@hry.gov.in

रास कला मंच के बारे में

रास कला मंच सफीदों की स्थापना इसके संस्थापक कला प्रेमी व समाज सेवी श्री रास बिहारी ने हरियाणा में स्थित जींद जिले के एक छोटे से कस्बे सफीदों में की | यह नाट्य संस्था नौजवान और प्रखर रंगकर्मी रवि मोहन और मनीष जोशी की मेहनत व चेष्टाओं से आगे बढ़ी | रास कला मंच हरियाणा व देश भर में सन 2004 से रंगकर्म के क्षेत्र में वीरता और धीरतापूर्वक संवहन कर रही है | सन 2015 में मनीष जोशी ' रास कला मंच ' से अलग हुए और अपनी अलग नाट्य संस्था बनाई | इसके पश्चात रंगगुरु रवि मोहन ने रास कला मंच का कार्य भार पूर्ण रूप से संभाला | इनके नेतृत्व में नाट्य दल ने कई राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय नाट्य महोत्सवों में सफल भागीदारी निभाई है | संस्था द्वारा दूसरा आदमी दूसरी औरत , हम तो ऐसे ही है , मैं कहानी हूँ , लख्मीगाथा, जब मैं सिर्फ एक औरत होती हूँ , चंदू भाई नाटक करते है , परसाई की चौपाल , कहन कहानी कहन , नागमंडल ,कुरुक्षेत्र गाथा , मारिया फररार, तीन खामोश औरतें , संक्रमण से वायरस तक , रेजांगला , कैम्प्लूप्स की

मछलियाँ ,विश्व गुरु भारत, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, आज़ादी के दीवाने, सरफ़रोश आदि नाटकों की सफल प्रस्तुतियाँ की गयी हैं | रास कला मंच हरियाणा की लोकनाट्य शैली पर भी काम करती आई है | रास कल मंच द्वारा कई नाट्य महोत्सव आयोजित किये जाते है | जिसमे विशेषतः राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव "चलो थियेटर", तीन दिवसीय नाट्य उत्सव " सर्पदमन" तथा "रासोत्सव" शामिल है | संस्था ने कई चर्चित सांस्कृतिक संस्थानों जैसे – राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नई दिल्ली , संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली , NZCC पटियाला , WZCC उदयपुर , NCZCC प्रयागराज , चुनाव आयोग भारत सरकार , हरियाणा कला परिषद् चंडीगढ़ , मल्टी आर्ट कल्चर कुरुक्षेत्र , सूचना जन संपर्क एवं सांस्कृतिक मामले चंडीगढ़ , कला एवं सांस्कृतिक विभाग , हरियाणा सरकार, संगीत नाटक अकादमी चंडीगढ़ , विकास बोर्ड कुरुक्षेत्र आदि के साथ भी कार्य किया है |

नाटक के बारे में

हरियाणा भारत का एक समृद्ध राज्य है | जिसकी अपनी राजनैतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक , सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान है | दिल्ली को तीन ओर से घेरा हुआ होने के कारण सदा से ही हरियाणा, अनेकों संग्रामों की युद्ध स्थली रहा है चाहे पानीपत की तीनो लड़ाईयां हो और चाहे दिल्ली के आस-पास की कोई और लड़ाईयां हो | अपनी इसी भौगोलिक विशेषता तथा अपनी वीरता के बल पर हरियाणा के लोगों ने समय-समय पर अनेकों बार युद्ध व क्रांतियों में अपने शौर्य का परिचय दिया है | इन्ही कारणों से हरियाणा के लोगों का जीवन शौर्य और वीरता से भरा है |

1857 आते-आते सारा भारत अंग्रेजों के अत्याचारों से त्राहिमाम-त्राहिमाम कर चुका था | 1857 में भारत के सभी वीर योद्धाओं के साथ–साथ हरियाणा के भी कुछ शूरवीर योद्धाओं ने 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम तथा अनेकों आंदोलनों में बढ़-चढ़कर भाग लिया और अंतत: 1947 में भारत को आज़ाद करवाया | यह मंचीय नाट्य प्रस्तुति. हरियाणा के क्रांतिवीर, आज़ादी के कुछ अनकहे किस्से और नायक ... उन्ही भारत व हरियाणा के नायक शूरवीरों के अनसुने व अनकहे किस्सों की कहानी है | जिन्होंने अपनी वीरता व बलिदान से मातृभूमि भारत का सिर गर्व से ऊँचा किया | जिनमें प्रमुख ... शेर नाहर सिंह , पंडित नेकीराम शर्मा , लाला हुकुम चंद्र जैन , मिर्ज़ा मुकीम चंद्र बेग तथा राव तुला राम इत्यादि है | परन्तु दुर्भाग्य का विषय यह है की हमे शुरुआत से ही आधा – अधूरा इतिहास पढाया और बताया गया है | जिसके कारण हमारे बुज़ुर्गो के बलिदान और शहादत हमारे सामने नहीं आ सकी है | बल्कि यहाँ तक कहा जाता है की हरियाणा के लोगों का योगदान तो आज़ादी में ना के बराबर था परन्तु ये तो बिलकुल गलत बात है बल्कि हरियाणा के लोगों का योगदान भी भारत के और प्रदेशों के लोगों के भांति अतुलनीय था | इसी अतुलनीय योगदान को समर्पित करते हुये यह नाट्य प्रस्तुति बनायीं गई है |

विशेष रूप से इस प्रस्तुति में आज़ादी से लेकर आज तक नवभारत निर्माण में हरियाणा की भूमिका का विस्तार से वर्णन है | इस मंचीय नाट्य प्रस्तुति ...हरियाणा के क्रांतिवीर, आज़ादी के अनकहे किस्से और नायक.... का उदेश्य भारत देश की महान विभूतियों के आदर्शों से अवगत कराना और वास्तविक हरियाणा के बारे में बताना है | आशा है की इस मंचीय प्रस्तुति को देखकर, पढ़कर तथा सुनकर आने वाली देश की भावी पीढ़ी के अन्दर देश प्रेम और देश भक्ति के भाव का सूत्रपात होगा |

लेखक एवं सह-निर्देशक के बारे में

भरतमुनि जी द्वारा आशीर्वाद स्वरूप प्रेषित–कलाकार वो है जो मनोरंजन के माध्यम से जीवन व समाज के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य करता है, इसी वक्तव्य की सार्थकता को अपना जीवन दर्शन समझकर चल रहे हैं पवन कुमार भारद्वाज | बचपन से ही इन्होने अपनी कलात्मक गतिविधियों से अपनी कला समझ को बढ़ाया है और पंजाब विश्वविधालय चंडीगढ़ के इंडियन थियेटर डिपार्टमेंट से स्नाकोत्तर की उपाधि ग्रहण की है | ये निरंतर सम्पूर्ण विश्व , जीवन व कला के अंर्तसम्बंधों के अध्ययन की कोशिशों में लगे रहते हैं | इनके अनुसार थियेटर सभी कलाओं का मिश्रण है | एक अभिनेता के रूप में इन्होने ' पैसा बोलता है ', 'समझदार लोग', ' धर्म संकट ', ' द टैम्पैस्ट ', 'बड़े भाईसाहब ', 'सदगति', 'श्री पैनी ओपेरा' और हरियाणा ग्रहण आदि प्रस्तुतियों में काम किया है | एक निर्देशक के रूप में इन्होने समझदार लोग, धर्म संकट, जल रहा पाकिस्तान, हजारे हम तुम्हारे, पंचायत, गुलाम पंछी और ओ बेटे चंडीगढ़ में अपना निर्देशन दिया |

एक सह–निर्देशक के तौर पर मैकबैथ, नाचनी, गुरु दक्षिणा, देहलीज़, गूंगी चीखे, कपालिका, नागमंडल, घासीराम कोतवाल, भगवतज्जुकम, हीर राँझा, कुरुक्षेत्र गाथा, रेजांगला, जीवन का रंगमंच और कैकई गाथा आदि | लेखक के रूप में पंचायत, गुलाम पंछी, हांसों दोपहरी में बबली गैल, हरियाणा ग्रहण ,ओ बेटे चंडीगढ़ , हैप्पी बर्थडे हरियाणा, लगता है हमे फिर आना पड़ेगा, जीवन का रंगमंच, कैकई गाथा, रामायण उत्सव, आज़ादी के दीवाने, विश्व गुरु भारत, स्लो पाइजन इत्यादि में अपना एहम योगदान दिया है | इन्होने रास कला मंच व अन्य नाट्य दलों के लिए अब तक लगभग 20 से ज्यादा नाट्य प्रस्तुतियों के लिए प्रकाश परिकल्पना व प्रकाश संचालन किया है | ये लगातार रास कला मंच के नाट्य उत्सव और प्रथम चलो थियेटर से अबतक हुये 11 वें चलो थियेटर तक बतौर कला-सलाहकार जुड़े हुये है तथा रास कला मंच के अन्य कलात्मक तकनीकी पहलूओं को देख रहे है | इनके द्वारा दी गयी प्रकाश परिकल्पना की प्रस्तुतियाँ एन.एस.डी, एन.एस.डी के अंतर्राष्ट्रीय रंग महोत्सव (भारगंम) और संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के पुरस्कार वितरण समारोह में प्रस्तुत हो चुकी है |

निर्देशक के बारे में

अभिनेता, निर्देशक, प्रशिक्षक और मार्गदर्शक रवि मोहन रंगमंच और मीडिया के साथ पिछले लगभग 25 वर्षों से जुड़े है | 2002 में इन्होने अपने पिता श्री रास बिहारी के साथ अपना सांस्कृतिक दल रास कला मंच, सफीदों के नाम से आरम्भ किया और युवा निर्देशक के रूप में पुरे देश में अपनी पहचान बनाई | इन्होने अभी तक 45 नाटकों का निर्देशन और 17 नाटकों में मुख्य अभिनेता के तौर पर अभिनय किया है | कुरुक्षेत्र विश्वविधालय, कुरुक्षेत्र से इतिहास विषय में लघु शोध करने के बावजूद इनका रंगमंच में व्यवसायिक रूप से आने का पूरा श्रेय ये श्रीमती डॉली अहलुवालिया तिवारी व श्री कमल तिवारी जी को देते है और ये अपने आपको को उनका ऋणी मानते है जिनकी वजह से इन्होने अपनी रंग–शिक्षा संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली व एन.एस.डी. दिल्ली द्वारा आयोजित नाट्य कार्यशालाओं में प्राप्त की व वरिष्ठ रंग-शिक्षकों से इन्हे रंगमंच की बारीकियों से सीखने का मौका मिला | इन्हें संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार से दो वर्षों के लिए जूनियर फेलोशिप प्राप्त है |

अपने रंगमंचीय सफ़र में इन्होने टॉम अल्टर, निरंजन गोस्वामी, कमल तिवारी,डॉली अहलुवालिया तिवारी, राजिन्द्र गुप्ता, जयदेव तनेजा, विनोद नागपाल व अन्य कई प्रतिष्ठित हस्तियों के साथ भी कार्य किया है | इसके अतिरिक्त इन्होने टी.वी. सीरियल एक और कहानी (डी डी १), सबरंग (डी डी हिसार), क्राइम पेट्रोल, ज़िंदगी के क्रॉस रोअड्स (सोनी टी.वी) और ब्रांड लेन एरोप्लेन (film),टिक ट्यूबर (short film), मेरे यार की शादी है , कैंप बनवास और कैंपस डायरी वेब सीरीज में भी बतौर अभिनेता काम किया है |

रंग निर्देशक के रूप में इन्होनें कई नाटकों का निर्देशन किया है जिनमें प्रमुख हैं नागमंडल,दूसरा आदमी दूसरी औरत,अन्धा युग,अक्स-तमाशा,मैं कहानी हूँ,चंदू भाई नाटक करते हैं, मरिया फ़रार, गूंगी चीखें, कुरुक्षेत्र गाथा, संक्रमण से वायरस तक, अषाढ़ का एक दिन, घासीराम कोतवाल, रेज़ांगला, जीवन का रंगमंच, हीर-राँझा, नाचनी, मिस्सू चन्नी, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, आज़ादी के दीवाने, विश्वगुरु भारत, सरफ़रोश चेखव की दुनिया, कम्प्लूप्स की मच्छिलयाँ इत्यादि | इनके द्वारा कई नाट्य महोत्सवों का भी आयोजन किया जाता है | इनके द्वारा निर्देशित किए गए नाटक मैकबेथ,कुरुक्षेत्र गाथा और विश्वगुरु भारत का मंचन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हुआ है |

इन्होने अलग-अलग जगह पर रंगमंच की कार्यशालाओं का भी आयोजन किया है, जिसमें कई युवा कलाकारों ने इनसे अभिनय के गुण सीखें |

इन्होनें भारत देश में आयोजित हुए कई प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नाट्य समारोह में कई नाटकों की प्रस्तुतियाँ की हैं | इन्हें कई रंग पुरस्कारों एवं सम्मान से नवाज़ा गया है | इन्हें पुणे में आयोजित राष्ट्रीय युवा महोत्सव में, नाटक नागमंडल के लिए सन २००७ में स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया |

निर्देशकीय

वैसे तो सन 1857 से लेकर 1947 तक लगभग यह 90 वर्ष स्वतंत्रता संग्राम व आज़ादी की दृष्टि से इतिहास में महत्वपूर्ण है | सन् 1857 ज़ेहन में आते ही कई महत्वपूर्ण नाम हमारे मस्तिष्क में उभरते है | इसका ये भी कारण है की हमने वो नाम हमेशा से सुने है या उन नामों पर कई तरह की रचनाएँ या फ़िल्में देखी और सुनी है | परन्तु कुछ ऐसे भी थे जिन्होने स्वतंत्रता संग्राम में अपने घर परिवार को छोड़कर इस संग्राम में भाग लिया और अपने प्राणों की आहुति दी | हमने उस इतिहास को पढ़ा है जो हमे पढ़ाया गया है | उस इतिहास को या तो अंग्रेजों ने लिखा है या उस समय की राजनीतिक परिवारों द्वारा लिखवाया गया था | वर्तमान समय में हरियाणा सरकार उन ऐतिहासिक घटनाओं और नामों के ऊपर काम कर रही है जिनका वर्णन हमारे इतिहास में नहीं हुआ है | अतः इसको ध्यान में रखते हुए मैं अपने रास कला मंच के कलाकारों के साथ " हरियाणा के क्रांतिवीर ....कुछ अनकहे किस्से और नायक"...नाम की प्रस्तुति तैयार की है जिसके लिए मैं अपनी टीम के साथ लगभग एक साल से उन्हीं लोगों पर कार्य कर रहा हूँ, जिसकी वजह से कई नाम हमें पता चले जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और मातृभूमि पर अपने प्राण न्योछावर किये | परन्तु एक प्रस्तुति में इतने नामों के जीवन को दिखा पाना हमारे लिए बहुत मुश्किल है | इसलिए हमने कुछ महत्वपूर्ण क्रांतिकारियों को लेकर इस प्रस्तुति को तैयार किया है... साथ ही इस प्रस्तुति में कई और नामों और घटनाओं का भी ज़िक्र किया है | आशा है कि इस नाट्य प्रस्तुति को देखने के बाद समाज का युवा वर्ग उन क्रांतिकारियों के नाम से जरूर परिचित होगा तथा सभी क्रांतिकारियों की दी गयी शहादत को जान पायेगा |

गीतकार सुभाष शर्मा

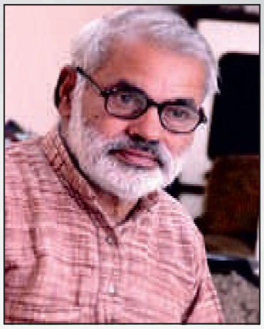

सुभाष शर्मा का जन्म 1948 हरियाणा के करनाल जिले के घरौंडा नाम के एक छोटे से कस्बे में हुआ था | हरियाणा सरकार के बिजली विभाग से 2006 में ये प्रथम श्रेणी अधिकारी के रूप में रिटायर हुए | गीतकार के रूप में इन्होने अपनी शुरुआत केवल 14 वर्ष की आयु (1962) में ही कर दी थी | आपकी विशेष रूचि देशभक्ति और देशहित में लिखने की रही है | बाद में आपने फिल्मों एवं एल्बमों के लिए भी लिखना शुरू किया | इनके द्वारा लिखे गये गीत बॉलीवुड के विभिन्न गायकों व गायिकाओं ने गाये | उनमे से प्रमुख है – सुरेश वाडेकर, सोनू निगम, विनोद सहगल, महेंद्र कपूर, शान, जावेद अली, सुनिधि चौहान, सपना अवस्थी और मधुश्री इत्यादि शामिल हैं | आपने रामानंद सागर द्वारा बनाई गयी रामायण सीरियल का हरियाणवी में अनुवाद हरियाणा न्यूज़ चैनल के लिए किया है | आपने तहलका चैनल के गीत सुरीले बोल सुरीले, कहानी एक गाँव की के शीर्षक गीत भी लिखे हैं |

हरियाणा सरकार के "नम्बर 1 हरियाणा" शीर्षक के नाम से लगभग 85 विज्ञापनों का लेखन आपने किया है | आपने नशे की मार, फ़िल्म के गीत, कहानी पटकथा और संवाद लिखे | आप द्वारा लिखी गयी फ़िल्म "सनम फिर मिलेंगे" निर्माणाधीन है | आपने रास कला मंच व कई महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों की नाट्य प्रस्तुतियों के लिए गीत लिखे हैं | उनमें से मुख्य तौर पर अक्स-तमाशा, नागमंडल, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, सुगंधी,हीर-राँझा और चंदू भाई नाटक करते है के गीत शामिल हैं |

मंच सज्जा एवं हस्त सामग्री निर्माता के बारे में

चित्रकार दीपक कुमार का जन्म 5 सितम्बर 1969 को हरियाणा प्रान्त के पानीपत शहर में हुआ | बचपन से इनकी रूचि कला एवं कलात्मक कृतियों में रही है | दीपक कुमार बहुआयामी प्रतिभा के धनी है और ये चित्रकला के अलावा मूर्तिकला, शिल्पकला एवं संगीत की भी अच्छी समझ रखते है | अपने सौम्य व्यक्तित्व के कारण ये सबके दिलों पर अपनी अनूठी छाप छोड़ते है | इन्होने चित्रकला की साधना प्रसिद्ध चित्रकार श्री सोमदत्त शर्मा (जींद) जी के सानिध्य में की | इनकी ख़ास रूचि यथार्थवादी चित्रकला में है | ये रासकला मंच , सफीदों रंगमंडल से काफ़ी लम्बे समय से जुड़े हुये है | इन्होने 'नागमंडल' , संक्रमण से वायरस तक ,मारिया फ़रार, रेजांगला ,रामायण उत्सव , सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक और कुरुक्षेत्र गाथा, विश्वगुरु भारत आदि नाटकों के लिए मंच परिकल्पना , मंच सज्जा व हस्त सामग्री तैयार की है | इनके अनुसार एक अच्छी अभिव्यक्ति के लिए कलाकार का भावुक होना बहुत आवश्यक है |

प्रकाश परिकल्पक एवं संचालक

प्रकाश परिकल्पक गौरव शर्मा ने 2006 में भारतीय रंगमंच विभाग, पंजाब विश्वविधालय से स्नाकोत्तर किया है | एन.एस.डी. नई दिल्ली से सीनोग्राफी एवं डायरेक्शन में 3 साल का डिप्लोमा किया है | सन 2010 में वो भारत के एक मात्र उम्मीदवार थे | जिन्हें इनलाक्स छात्रवृत्ति की माध्यम से स्टेज मैनेजमेंट और टेकनिकल थिएटर में 2 साल के डिप्लोमा के लिए लन्दन अकादमी ऑफ़ म्यूजिक एंड ड्रामेटिक आर्टस (LAMADA) 2010-12 के लिए चुना गया था | इन्हें साहित्य, संगीतकला और वास्तुकला में मुख्य रूचि है | प्रकाश परिकल्पना, लेखन और दृश्य चित्रण में इनकी विशेष योग्यता है | किसी भी स्थान या संरचना के लिए प्रकाश परिकल्पना करना इनका जूनून है | उनके कौशल और प्रशिक्षण ने उन्हें मनोरंजन के क्षेत्र में भारत और विदेशों में विभिन्न ओपेरा, नृत्य प्रदर्शन, संगीत समारोहों और शास्त्रीय एवं समकालीन रंगमंच को डिज़ाइन करने में सहायता की है | वर्ष 2015 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रकाश परिकल्पना के लिए उस्ताद बिस्मिलाह खान पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है |

अंकिता

नृत्य परिकल्पक के बारे में

अंकिता गोरखपुर उत्तर प्रदेश से दिग्विजय नाथ पी.जी. कॉलेज से ग्रेजुएट हैं | पिछले 8 वर्षों से रंगमंच के क्षेत्र में सक्रीय हैं | 2019 में इन्होने भारतेंदु नाट्य अकादमी से नाट्य विधा में डिप्लोमा प्राप्त किया और साथ ही शास्त्रीय नृत्य की शिक्षा प्रयाग संगीत समिति से प्राप्त की हैं | इन्होने मानवेन्द्र त्रिपाठी , मनोज शर्मा , के. के. राजन, कीर्ति जैन, सत्यव्रत राउत, पार्था बंधोपाध्याय, बंसी कॉल, सी. आर. जाम्बे , विक्रांत मणि त्रिपाठी के साथ काम किया है | इन्होने " मैं और रूही " नाटक का लेखन किया ,उसे अभिनेत्री और निर्देशिका के रूप में मंचित किया है | साथ ही सूर्य मोहन कुलश्रेष्ठ, बंसी कॉल, पार्था बंधोपाध्याय और विक्रांत मणि त्रिपाठी के निर्देशन में सह-निर्देशिका के तौर पर काम किया है | मेटामोरफोसिस, पगलाए गुस्से का धुआँ तथा दीक्षा उपन्यास के नाट्य रूपांतरण में सह-लेखन किया है | गज- फुट-इंच, उठो-अहल्या , बंद कमरे , विरासत, पगलाए गुस्से का धुआँ, लोअर डेप्थ, बेबी, बलि और शंभू, प्रेमचंद के पात्र प्रेमचंद के साथ, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक नाटकों में अभिनेत्री के तौर पर कार्य किया है | इनकी रूचि विशेष तौर पर बच्चों और लड़कियों को नृत्य और नाट्य प्रशिक्षण देने में हैं | इन्होने कई स्कूलों में नृत्य प्रशिक्षक के तौर भी कार्य किया है | ये रास कला मंच द्वारा हर साल आयोजित राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव (11वें चलो थियेटर) में प्रबंधक सहायक के रूप में कार्य कर चुकी हैं | डु एंड डाई शक नाम की (short film) में भी अभिनय किया हैं | वर्तमान में रास कला मंच , सफीदों के रंगमंडल में बतौर अभिनेत्री के रूप में कार्य कर रही है |

शिवानी दुबे

वस्त्र-विन्यास कलाकार के बारे में

वाराणसी उत्तर प्रदेश में जन्मी शिवानी दुबे पिछले 5 वर्षों से रंगमंच के क्षेत्र में सक्रीय हैं | इन्होने स्नातक की पढाई दिल्ली यूनिवर्सिटी से पूरी की है | काशी हिन्दू विश्वविधालय से फैशन डिज़ाइनिंग में एक साल का डिप्लोमा और साथ ही विश्वविद्यालय आई.आई.टी. डिपार्टमेंट द्वारा आयोजित आरती विश्वकर्मा के सानिध्य में वर्कशॉप की है | साथ ही इन्होने काशी हिन्दू यूनिवर्सिटी से 7 दिवसीय थियेटर वर्कशॉप भी की हैं | ये सन 2017 से रास कला मंच से जुड़ी हुई हैं | इन्होने रामायण , कैम्प्लूप्स की मछलियाँ , विश्वगुरु भारत , सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक , घासीराम कोतवाल , आज़ादी के दीवाने और स्लो पाइजन नाटकों का कॉस्ट्यूम डिज़ाइन किया हैं | इसके अलावा इन्होने हेल्लो पुलिस (कॉमेडी वेब सीरियल) में भी कॉस्ट्यूम डिज़ाइन किया हैं | कॉस्ट्यूम डिज़ाइन के साथ ही साथ इन्होने कैम्प्लूप्स की मछलियाँ, मारिया फ़रार , आज़ादी के दीवाने और सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक नाटकों में भी बतौर अभिनेत्री कार्य किया है | इन्होने टिकट्यूबर (short film) में मुख्य किरदार में रही हैं | इसी के साथ ये रेजांगला नाटक में संगीत संचालन भी कर चुकी हैं | ये रासकला मंच द्वारा हर साल आयोजित राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव (11वें चलो थियेटर) और नाट्य महोत्सव (सर्पदमन) में प्रबंधक सहायक के रूप में कार्य कर चुकी हैं | वर्तमान में ये रास कला मंच रंगमंडल, सफीदों में बतौर अभिनेत्री,वस्त्र -विन्यास और मंच प्रबंधक के तौर पर कार्य कर रही हैं |

JOIN US IN PREVENTION OF CORONA VIRUS INFECTION

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

RAS KALA MANCH

Ward No: 9, Near Jaycee Bhawan, Samrat Colony
Safidon-126112, Jind (Haryana) INDIA

92155-12300 raskalamanch@gmail.com www.raskalamanch.in